मेरे बच्चों ने मुझे गढ़ा है

बारिश की बौछारों की तरह मैं बच्चों के सवालों से मैं घिरी रहती हूं। जिसमें भीगना मुझे अच्छा–सा लगता है। उनमें सोंधी सी महक होती है उनके अल्हड़पन की। उनके सवालों ने मुझे बहुत कुछ सिखाया है।

मीना जोशी

मेरी एक छोटी सी दुनिया है, मगर उसमें बहुत सारी बड़ी–बड़ी दुनिया हैं। टीचर हूँ न, ये मेरे बच्चों की दुनिया है। जो आज भी बहुत खूबसूरत है। उनकी मासूमियत, उनकी मुस्कुराहट, खिलखिलाहट, मेरा उनसे नाराज होना और कभी उनका मुझसे भी। मेरे नकली गुस्से को समझना, मगर सिर झुका लेना। दिन भर मुझे न्यायाधीश बना कर रखना और खुद वकीलो की तरह दोनों पक्षों में बराबर की जिरह। फिर जरा सी बात पर सबका एक साथ होना, ये सब उस दुनिया की खूबसूरती है।

उनकी ढेरों कहानियां है, जिनमें से कुछ तो वो बस मुझे ही सुनाना चाहते हैं। जिन्हें सुनकर मैं कभी–कभी सोच में पड़ जाती हूँ। कभी–कभी वो मजेदार होती हैं, और हम सब मिलकर हँस पड़ते है। वहाँ दंगे भी होते हैं मगर उन्हें तो मैं ही रोक लेती हूँ। काश ऐसा मैं कहीं और भी कर पाती। दोस्ती ऐसी कि जिसके साथ न बैठने की हिदायत घर से मिली और माँ का चाँटा खाया उसी के साथ पूरा दिन बिताया।

बारिश की बौछारों की तरह उनके सवालों से मैं घिरी रहती हूं। जिसमें भीगना मुझे अच्छा–सा लगता है। उनमें सोंधी सी महक होती है उनके अल्हड़पन की। 'मैं सब कुछ नहीं जानती'...मेरा ये कहना उनके लिये बिल्कुल झूठ है। इसे वो मानने को तैयार ही नहीं होते। मुझे उनकी इस नादानी पर हंसी आती है और उनके जवाब कहीं न कहीं से ढूंढने ही पड़ते हैं। खुशनसीब हूँ कि मेरे पास खड़े होकर वो खुशी पाते है और मेरे जीवन का एक बड़ा हिस्सा इस खूबसूरत दुनिया में गुजरता है।

मेरा इस दुनिया में आना अनायास ही नहीं हुआ। यह सफर तब शुरू हुआ जब मैं पहली बार अपनी मां के गांव घूमने गई। उस सुदूरवर्ती क्षेत्र में हम जब सैर पर निकले तो हमें गांव से काफी दूरी पर एक छोटा सा विद्यालय दिखाई दिया। रविवार था किंतु विद्यालय बंद नहीं था। जी हां! तरीके से लिपे–पुते उस विद्यालय में कोई ताला नहीं लगा था। वहां के शांत वातावरण में एक दिव्यता सी थी। जो मुझे आज भी महसूस होती है। कुछ बच्चे वहां पर खेल रहे थे। जो मुझे देख कर पास आ गए। उनकी सरलता व निश्छलता मानो मुझे अपनी ओर खींच रही थी। ग्रामीण अंचल के उन मासूम बच्चों ने मानो मुझे एक निश्चय सा दे दिया था कि मैं भी प्रकृति के इन फूलों को खिलने में मदद करूंगी। दीदी, फिर कब आओगी? उनका यह कहना भविष्य में उन जैसे न जाने कितने बच्चों के करीब ले आया।

ऐसा नहीं है कि उसके बाद कोई और सपना आंखों में नहीं आया। मगर वह एक सपना उन सबको पीछे हटा मुस्कुराता हुआ मेरे सामने खड़ा हो जाता था। मेरी प्रिय अध्यापिका मेरे इस निर्णय पर खुश नहीं हुई। 'मैं तुम्हें कुछ और आगे देखना चाहती हूँ। इतनी जल्दी निर्णय मत लो। तुम्हें अभी और आगे बढ़ना है' उनका यह कहना एक अभिभावक का रूप था। मैं बहुत ही भाग्यशाली रही हूं कि मुझे ऐसे शिक्षक मिले। जिनकी कही बहुत सी बातें मेरे लिए हमेशा प्रेरणा स्रोत बनी। कक्षा 11 में श्रीमती नीता कुकरेती मेरी अध्यापिका थी। उनका एक तरीका था। पाठ के अंत में उनका एक प्रश्न होता था कि जो तुम्हें समझ आया उसे कक्षा के दोस्तों को भी समझाओ।

एक दिन उन्होंने मुझसे कहा कि ''तुमने जिस तरह से समझाया है जब हम तुम्हारी उम्र के थे ऐसा नहीं कर पाते थे' इस उदाहरण का उद्देश्य आत्मप्रशंसा नहीं बल्कि यह है कि कितना सरल है वह शिक्षक, जो अपने बच्चों का हौसला बढ़ाने के लिए ऐसे शब्द कह पाता है। उनके इस वाक्य को मैं भी अपनी कक्षाओं में दोहराने का प्रयास करती हूं। जैसे– मैं तुम्हारी तरह झटपट गणित के कठिन प्रश्नों को हल नहीं कर पाती थी। या मुझे तुम्हारी तरह ऊंची कूद लगाना कभी नहीं आया आदि। मेरा मानना है कि 'तुमसे कभी नहीं होगा' या 'तुम्हारे बस का कुछ भी नहीं' जैसे वाक्यो का विद्यालय में प्रवेश–निषेध होना चाहिए। सबके सम्मुख यह बात कहना फूल की पंखुड़ी को कांटे से बेध देना है। वह जितना भी कर पाए हम उसे स्वीकारें। यदि नाराज ही होना है तो खुद से हों। क्योंकि हम उसे सिखा नहीं पा रहे हैं। बच्चा इस बात को बेहतर समझता है कि आप उसके लिए कितनी कोशिश कर रहे हैं। इस संदर्भ में मुझे एक घटना की याद हो आई। मेरा स्थानांतरण हुए 2 माह बीत गए थे किंतु मैं अपने उस विद्यालय को एक क्षण भी भूल नहीं पाती थी जहां मैंने 10 वर्ष बिताए थे। यह लगभग ढाई वर्ष पहले की बात है। एक दिन मुझे किसी काम से अपने पुराने विद्यालय के निकट बाजार में जाना था। मेरा मन उदास था क्योंकि रविवार होने के कारण मैं अपने विद्यालय जाकर बच्चों से नहीं मिल पाऊंगी। मैं वापसी के लिए जीप में बैठी हुई थी कि मेरा एक छात्र मुझे दूर से देख कर दौड़ता हुआ आया। उसने खिड़की से मेरे हाथ को छुआ और मेरे पूछने पर कि 'कैसे हो तुम लोग? बहुत उदास हो गया। मैंने उसके सिर पर प्यार से हाथ फेरा। वह मेरा एक बेहद 'कमजोर' छात्र था। जिस पर मैं उन दिनों बहुत मेहनत कर रही थी। किंतु उसी बीच मेरा स्थानांतरण हो गया। मेरा मन उसके लिए भर आया था। मैं अभी आया मैम– कहकर वह गया और दो मिनट बाद एक सेब लेकर लौटा। पापा आजकल फल की दुकान लगाते हैं। आप इसे रास्ते में खा लेना। कहकर जैसे ही उसने वह सेब मुझे पकड़ाया जीप चल पड़ी। मैं बहुत भावुक हो गई थी। मैंने उसे हाथ हिलाया और अपने मुंह को दुपट्टे से लपेट लिया क्योंकि भावनाओं के जिस बांध को अब तक मैं संभाले बैठी थी, वह अब टूट चुका था।

एक शिक्षक के लिए कक्षा कक्ष में जिन चुनौतियों पर बात कभी नहीं हो पाती वह हैं– जिस बच्ची ने अपनी मां को खो दिया है। उसे यह कविता कैसे पढ़ाई जाए– मैं सबसे छोटी होऊं, तेरी गोदी में सोऊं, सदा फिरूं मां तेरे साथ, कभी ना छोडूं तेरा हाथ या माता पिता विहीन बच्चों को पाठ का यह अंश कराना कि तुम अपने माता–पिता के किस–किस काम में हाथ बंटाते हो? या एक समावेशित कक्षा में 'आंखें ईश्वर का अनमोल वरदान' पढ़ाना जबकि एक छोटा सा दृष्टिहीन बच्चा भी वहां मौजूद हो। ऐसी अनगिनत समस्याएं हैं जिनका समाधान हर अध्यापक को रोज ही करना पड़ता है। लेकिन सिर्फ भावनाओं में बह जाना ही इसका समाधान नहीं है। आपको कई अनोखे तरीकों की आवश्यकता पड़ती है। इसके लिए पूरी कक्षा को संवेदनशीलता और समानुभूति का पाठ पढ़ाना भी बहुत जरूरी है। मैंने जब भी थोड़ा बहुत लिखा है अपने बच्चों को एडिटर बनाकर पढ़ने को दिया है। कारण सिर्फ और सिर्फ यही रहा है कि उनमें भी संवेदनाओं का विकास हो और वे मानवीय जीवन के विभिन्न पहलुओं को जान सकें। कभी–कभी यह संवेदनाएं इतनी प्रबल हो जाती हैं कि हम स्वयं को असहाय महसूस करने लगते हैं।

मेरे विद्यालय में एक बच्चा जो कि दृष्टिबाधित था। मैं उसे दृष्टिहीन लिखने का साहस नहीं कर पाती। जबकि अन्य लोगों का यह कहना था कि वह देख नहीं पाता है। 'मेरे हाथ में क्या है? पूछने पर कई बार वह सही उत्तर देता था जिसका रहस्य मैं आज तक नहीं जान पाई।

मैं एक दिन उसके पिता के साथ उसे लेकर एक प्रसिद्ध नेत्र विशेषज्ञ के पास गयी। मैं बहुत आशान्वित थी कि आज कोई राह जरूर मिलेगी। डॉक्टर ने मुझे सबसे पहले अंदर बुलाया। किंतु जब जांच के बाद उन्होंने मुझे बुलाकर कहा कि कोई भी संभावना नहीं। आप इस बच्चे को ब्लाइंड स्कूल में दाखिला दिलाने का प्रयास कर सकती हैं– यह सुनकर मुझे लगा जैसे कि मैं चक्कर खाकर गिर पड़ूंगी। उसके पिता से क्या कहूं? उससे क्या कहूं? स्कूल जाकर सबसे क्या कहूंगी? मैंने सब से क्या–क्या कहा मुझे कुछ याद नहीं। घर में मेरे बच्चे भी बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। आते ही बोले– मम्मी क्या कहा आपके बच्चे के लिए डॉक्टर ने? यह सुनना था कि मेरी आंखों से आंसू निकल पड़े। पूरे दिन उन्होंने फिर कुछ नहीं पूछा। इन सभी बातों ने मेरे बच्चों को भी मानवीय मूल्य दिए हैं। बचपन से ही अपने जन्मदिन की

टॉफियां हो या दिवाली के पटाखे 'यह आपके बच्चों के लिए' कह कर जब वह मुझे दे देते तो मुझे बहुत अच्छा लगता।

मेरा हमेशा यह मानना रहा है कि हमें बहुत बड़े–बड़े काम करने के लिए समय का इंतजार नहीं करना चाहिए। क्योंकि हमारे द्वारा किया गया एक छोटा सा प्रयास भी इन मासूम बच्चों को राह दिखा सकता है। अभी पिछले दिनों मेरी एक छात्रा का पत्र मुझे फोन पर मिला। मैम आपको याद है.. से शुरू हुआ वह पत्र लगभग 4 पृष्ठ लंबा था। वह अब बी.ए. की छात्रा है। मैंने उसे कक्षा 5 तक पढ़ाया था। जब वह कक्षा 9 में गई तो एक दिन उसकी मां ने बहुत परेशान होकर मुझसे कहा कि नीलू विद्यालय नहीं जाने की जिद पर अड़ी है। कई दिन हो गए हैं किसी की भी बात सुनने को तैयार नहीं है। अब आप ही उसे समझा सकती हैं। वह एक अच्छी छात्रा थी। यह सुनकर मुझे दुख हुआ। मैंने उसकी मां को कुछ समझाया। और अगले दिन नीलू का विद्यालय खुलने से पूर्व ही मैं वहां पहुंच गई। मैंने उसके कक्षा अध्यापक से काफी देर तक बातचीत की। उन्होंने मुझे पूरा आश्वासन दिया कि वे उसका मनोबल बढ़ाएंगे और उन्होंने ऐसा किया भी। नीलू आज टी.सी. लेने की शर्त पर मां के साथ विद्यालय आई किंतु 1 घंटे की बातचीत के बाद वह हंसती हुई घर लौटी। उस दिन मैं 1 घंटा देर से विद्यालय पहुंची किंतु नीलू के लिए अभी कुछ भी देर नहीं हुई थी। प्रतिवर्ष उसकी कक्षा में सफलताओं के पत्र मुझे आते रहे। मेरा मानना है कि इन बच्चों की ख्वाहिशें इतनी बड़ी कभी नहीं होती कि आप इन्हें पूरा ना कर सकें। वह चाहते हैं कि आप उन्हें पढ़ते हुए सुने, उनके लेख की तारीफ करें उन्हें हंसते हुए देखे यहां तक कि रोते हुए भी। वह मध्यांतर में भी यही चाहते हैं कि आप उन्हें उछलते–कूदते हुए हुए जीतते हुए देखें। मैं अपनी इस नटखट दुनिया को छोड़ना नहीं चाहती थी कि तभी मेरी पदोन्नति हो गई। अब मैं किशोर वय के बच्चों की अध्यापिका हूं। मैंने पाया कि इन्हें एक ऐसा मित्र चाहिए जिस पर यह आंख मूंदकर विश्वास कर सकें जो इनके जीवन में हो रही हलचलों को पहचान सके। यहां भी मन में बहुत से सवाल हैं। पर प्रायः यह पूछे नहीं जाते। कभी–कभी आपको उन सवालों पर बिना पूछे भी चर्चा करनी होती है। यह नहीं चाहते कि उनके प्रश्नों की आप सबके सामने चर्चा करें किंतु उनके जवाब सभी को चाहिए होते हैं।

किंतु मुझे एक बात जो बहुत खुशी देती है वह यह है कि इनके साथ कोई भी समस्या होने पर उनकी आंखें सर्वप्रथम मुझे ही तलाशती हैं। मेरा उनसे वादा है कि मैं उनके प्रश्नों को यदि वे चाहें तो किसी से नहीं कहूंगी। इस कारण वे अपने मन में आए हुए किसी भी सवाल को मुझसे पूछ पाते हैं। कभी–कभी वह कुछ ऐसे सवाल भी पूछते हैं जो उनकी सेहत से जुड़े हैं या जिसे वे एक महान समस्या समझ बैठे थे किंतु वह उनके सामान्य विकास क्रम का एक हिस्सा थी। मुझसे इन समस्याओं का हल पाकर वे बहुत खुश होते हैं। कभी–कभी मैं उन्हें चिकित्सक से परामर्श हेतु भी भेजती हूं। यदि आर्थिक सहायता की आवश्यकता होती है तो उसे भी करने का प्रयास करती हूं। किन्तु और किसी से इस बात को साझा करने की आवश्यकता नहीं समझती। अगर वे उस पैसे को बाद में वापस करना चाहते हैं तो मैं उसे वापस ले लेती हूं। उन्हें अच्छा लगता है। अभी दो माह पूर्व हमें पिकनिक पर जाना था। तब कई बच्चों ने अपनी जमा की हुई राशि से पिकनिक पर जाने का शुल्क दिया। किंतु जिनके पास कुछ कमी पड़ रही थी उन्होंने चुपके से मेरे पास आकर इस समस्या को साझा किया। किसी को रु 50 किसी को 30 किसी को 20 की आवश्यकता थी। किंतु बाद में लगभग सभी ने मुझे वह रुपए लौटा दिए। मेरी कक्षा 4 की एक बच्ची ने एक दिन फोन पर मुझे बताया कि हमारे लगाए हुए गुलाब के पौधे में फूल आ गए हैं। हम अब भी कभी फूल नहीं तोड़ते हैं। इन प्यारी–प्यारी कहानियों का एक अंतहीन सिलसिला है। जिसने मेरे जीवन का ताना–बाना ही बदल दिया है। सच कहूं तो मैंने उन्हें नहीं, बल्कि उन्होंने मुझे गढ़ा है।

(लेखिका उच्चतर प्राथमिक विद्यालय बद्रीपुर, देहरादून में अध्यापिका हैं)